Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, JAN-FEB, 2019, VOL- 6/49

भारतीय राजनीति में आदर्श के प्रतिमान अटल बिहारी वाजपेयी

धरवेश कठेरिया[1], भरत पंडा[2], अविनाश त्रिपाठी[3], पदमा वर्मा[4], नीरज कुमार सिंह[5] & अनुराधा[6]

[1]- सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[2]- सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[3, 4]- एम. फिल. शोधार्थी, जनसंचार विभाग (2016-17), महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[5]- एम. फिल. शोधार्थी, सामाजिक वहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केंद्र (2016-17),काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश।

[6]- शोधार्थी एम. ए., जनसंचार विभाग , महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

Abstract

अटल बिहार वाजपेयी बहुमुखी प्रतिभा के धनी मुखर वक्ता और एक सफल राजनेता थे। इन्होंने बिना किसी दबाव के समाज के हित के लिए बड़े फैसले लिए और भारत को विश्व में एक अलग मुकाम दिलाया। भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत बहुत ही विविधता पूर्ण है। अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए बहुत-सी महत्वपूर्ण योजनाएं चलाई जिसमें भारत के प्रत्येक ग्राम को और पूरे भारत को सड़कों से जोड़ने की प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और चतुर्भूज योजना को समाज के विकास के मूल के रूप में देखा जाता है।

अटल बिहारी वाजपेयी का नाम आदर्श राजनेता के रूप में लिया जाता है। वाजपेयी जी राजनीति के क्षेत्र में लगभग चार दशकों तक सक्रिय रहे। वह लोकसभा में नौ बार और राज्यसभा में दो बार चुने गए जो अपने आप में एक कीर्तिमान है। वाजेपयी जी ने अपना करियर पत्रकार के रूप में शुरू किया था। वर्ष 1991 में जनसंघ में शामिल होने के बाद उन्होंने पत्रकारिता छोड़ दी। महिलाओं के सशक्तिकरण और सामाजिक समानता के समर्थक वाजपेयी जी भारत को विश्व में एक दूरदर्शी, विकसित, मजबूत और समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहे। इन्हें भारत के प्रति निःस्वार्थ समर्पण और 50 से अधिक वर्षों तक देश और समाज की सेवा करने के लिए भारतरत्न, पद्म विभुषण जैसे सर्वोच्च भारतीय सम्मान से सम्मानित भी किया गया है। 1994 में इन्हें भारत का सर्वश्रेष्ठ सांसद भी चुना गया था। इनके कार्य राष्ट्र के प्रति इनके समर्पण को बखूबी दर्शाते हैं। इनके भाषणों को लोग मंत्रमुग्ध होकर सुनते थे।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ये एक आदर्श राजनेता के साथ-साथ एक बहुत अच्छे कवि भी थे। 1977 में जनता सरकार में विदेश मंत्री रहते हए अटल बिहारी वाजपेयी ने यूएन में अपना पहला भाषण हिन्दी में ही दिया था जो उस वक्त बेहद लोकप्रिय हुआ और पहली बार यूएन जैसे अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की राजभाषा गूंजी। इतना ही नहीं भाषण खत्म होने के बाद यूएन में आए सभी देश के प्रतिनिधियों ने खड़े होकर अटल बिहारी वाजपेयी का तालियों से स्वागत भी किया। जो अटल जी का हिंदी के प्रति, अपने राष्ट्र के प्रति समर्पण को दर्शाता है। देश में ऐसे आदर्श राजनेता, प्रधानमंत्री और उच्च विचार वाले बुद्धिजीवी विरले ही मिलते हैं।

शब्द कुंजी: *अटल बिहारी वाजपेयी, राजनीति, आदर्श, प्रतिमान।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

उपकल्पना

1. भारतीय राजनीति के लिए अटल बिहारी वाजपेयी एक आदर्श हैं।
2. देश के विकास को अटल बिहारी वाजपेयी ने गति प्रदान की।
3. अटल बिहारी वाजपेयी राजनेता, कवि और पत्रकार के रूप में एक आदर्श हैं।
4. अटल बिहारी वाजपेयी राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक थे।

उद्देश्य

अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए निम्न उद्देश्य तय किए गए हैं-

1. अटल बिहारी वाजपेयी के देशहित के कार्यों का अध्ययन करना।
2. भारत देश को गति देने में अटल बिहारी वाजपेयी की भूमिका का अध्ययन।
3. अटल बिहारी वाजपेयी की आदर्श राजनीति का अध्ययन।
4. अटल बिहारी वाजपेयी की पत्रकारिता का अध्ययन।

साहित्य पुनरावलोकन

- वाजपेयी, अटल बिहारी, शर्मा, डॉ. चंद्रिका प्रसाद (संपादक). (1997). बिन्दु-बिन्दु विचार, नई दिल्ली: किताब घर प्रकाशन।

भारतीयकरण, एक नारा नहीं जीवन दर्शन है, एक प्रतिक्रिया नहीं, एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है। आदि काल से भारत अनेक जातियों तथा जीवन प्रवाहों का संगम रहा है। संघर्ष और समन्वय के माध्यम से विभिन्न जातियां भारत में इस तरह से घुल मिल गई हैं

कि इनको अलग-अलग नहीं किया जा सकता है। इन्हीं सब विचारों को सम्मिलित कर पुस्तक भारत की संपूर्ण जाति व्यवस्था को रेखांकित करती है। भारतीयों का भारतीयकरण करने की बात भले ही कुछ लोगों को अटपटी लगे किंतु यह सच है कि जन्म से ही भारतीय होते हुए भी मन, वचन तथा कर्म से भारतीय होने वालों की संख्या उंगली पर गिनी जा सकती है। इन्हीं सब प्रश्नों को पुस्तक में उठाया गया है। देश में ब्राह्मण मिलते हैं, हरिजन मिलते हैं, सिख पहचाने जाते हैं, जैन अलग से विराजमान हैं, मुसलमान हैं, इसाई हैं, प्रदेशों के आधार पर बंटे हुए लोग हैं, विभिन्न-विभिन्न धाराएं हैं लेकिन संपूर्ण भारत के प्रति निष्ठा रखने वाले व्यक्तियों की संख्यांए गिनी चुनी है। इन्हीं सब महान लक्ष्यों को लेकर यह पुस्तक सभी पुस्तकों से अपने को अलग करती है।

- वाजपेयी, अटल बिहारी, घटाटे, डॉ. नारायण माधव. (2004). संकल्प-काल, दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।

अटल बिहारी वाजपेयी के चिंतन और चिंता का विषय हमेशा ही संपूर्ण राष्ट्र रहा है। भारत और भारतीयता की संप्रभुता और संवर्द्धन की कामना उनके निजी एजेंडे में सर्वोपरि रही है। यह भावना और कामना कभी संसद में विपक्ष के सांसद के रूप ने प्रकट होती रही, कभी कवि और पत्रकार के रूप में, कभी सांस्कृतिक मंचों से एक सुलझे हुए प्रखर वक्ता के रूप में और 1996 से भारत के प्रधानमंत्री के रूप में अभिव्यक्त हुई। प्रधानमंत्री पद पर आसीन होने के बाद भी उनकी कथनी और करनी एक ही बनी रही। इसका प्रमाण हैं इस 'संकल्प-काल' में संकलित वे महत्वपूर्ण भाषण जो अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री के रूप में विभिन्न मंचों से दिए। अपनी बात को स्पष्ट और दृढ़ शब्दों में कहना अटलजी जैसे निर्भय और सर्वमान्य व्यक्ति के लिए सहज और संभव रहा है ।

- शर्मा, महेश. (2001). जन-जन के नेता अटल बिहारी वाजपेयी, दिल्ली: डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पुस्तक में अटल बिहारी वाजपेयी को एक लोकप्रिय नेता के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि कैसे उन्होंने अपने आप को प्रत्येक जन के शुभचिंतक के रूप में स्थापित किया। उनकी जीवनी बखूबी इसमें दर्शाई गई है। उनकी प्रमुख राजनीतिक यात्राओं को बहुत ही अच्छे ढंग से इसमें संकलित किया गया है। अटलजी को प्रधानमंत्री के रूप में एक आदर्श के रूप में यह पुस्तेक उन्हें स्थापित करती है। लखनऊ से चौथी बार नामक अध्याय में अटल जी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने, कांटों का ताज, राष्ट्र कुल सम्मेलन, विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियां, विदेशी निवेश आदि महत्वपूर्ण उपशीर्षकों के माध्यम से उनके योगदान को पुस्तक रेखांकित करती है। अध्याय 25 कौन बनेगा प्रधानमंत्री पुस्तक को बेहद रोचक बनाता है। कुल मिलाकर यह पुस्तक अटल बिहारी वाजपेयी को समझने में बहुत ही महत्वपूर्ण है।

- वाजपेयी, अटल बिहारी, घटाते, नारायण माधव. (2004). गठबंधन की राजनीति, दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।

पुस्तक में संपादकीय लिखते हुए संपादक ने लिखा है कि 1999 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने मंतव्य को कुछ इस तरह व्यक्त किया था "गठबंधन की सरकार बनाना आसान है पर इसे चलाना आसान नहीं है। देश ने अब गठबंधन के युग में प्रवेश किया है। भाजपा और कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टियों के अलावा क्षेत्रीय पार्टियां भी भारतीय राजनीति का हिस्सा बन चुकी हैं लेकिन जब तक ये राजनीतिक दल गठबंधन के व्यापक हितों के अनुरूप अपनी सीमाएं नहीं पहचानेंगे तब तक गठबंधन का युग अस्थिरता से भरा रहेगा, जिससे न तो आर्थिक विकास हो सकेगा, न कानून व्यवस्था संतोषप्रद हो सकेगी।" उपरोक्त कथन से हम पुस्तक के सार को समझ सकेंगे कि किस प्रकार से देश में आज भी गठबंधन की राजनीति ठगबंधन से आगे नहीं बढ़ सकी है।

- शर्मा, महेश. (2016). प्रखर राष्ट्रवादी नेता अटल बिहारी वाजपेयी, दिल्ली: डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रखर राष्ट्रवादी नेता, श्रेष्ठ वक्ता और सर्वश्रेष्ठ सांसद रह चुके अटल बिहारी वाजपेयी का राजनीतिक जीवन अपने समकालीन राजनेताओं के लिए ही नहीं, वरन् वर्तमान और भविष्य के नेताओं के लिए भी आदर्श एवं अनुकरणीय है। उनकी राजनीति विपक्षी पार्टियों पर आक्षेप लगाकर अपनी पार्टी को चमकाने की कभी नहीं रही, बल्कि राष्ट्रहित के मुद्दे उठाकर जनाधार बढ़ाने में उनका विश्वास रहा है। उन्होंने वर्ग विशेष के विरुद्ध या पक्ष में मुद्दे उठाकर राजनीतिक स्वार्थ-सिद्धि नहीं की, वरन् राष्ट्रहित की राजनीति को अपना परम लक्ष्य माना। यही कारण है कि विचारधारा में घोर विरोध होने के बावजूद तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरू भी अटल जी की सराहना करने से स्वयं को रोक न सके। अटल बिहारी वाजपेयी ने एक सांसद बनकर, एक राष्ट्रीय राजनीतिक दल का अध्यक्ष पद संभालकर, संसद में विपक्ष की राजनीति कर और अंतत: देश का प्रधानमंत्री पद संभालकर भारत के राजनेताओं के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। प्रस्तुत पुस्तक 'प्रखर राष्ट्रवादी राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी' में वाजपेयी जी के जन्म, शिक्षण और राजनीतिक उत्कर्ष पर पहुंचने की गौरवगाथा का सरल और सरस भाषा में रोचकता के साथ वर्णन किया गया है।

- राजस्वी, एमआई. (2004). अटल बिहारी वाजपेयी. दिल्ली: मनोज प्रकाशन।

लेखक ने अटल बिहारी वाजपेयी के गौरवशाली अतित को पन्नों पर उकेरा है। उनके धैर्य और मनोबल को उनके निर्णयों के माध्यम से पुस्तक में लिखा है। अटल बिहारी वाजपेयी बहुत ही मृद स्वभाव और ओजपूर्ण व्यक्तित्व के स्वामी थे। उनसे मिलने के बाद शायद ही कोई ऐसा हो जो उनकी वाकपटुता का लोहा न माने और उनसे प्रभावित हुए बिना रह सके। लेखक ने अटलजी के बहुत से निजी पहलुओं को भी पाठकों के सामने रखा है। सही मायने में यह पुस्तक अटलजी को समझने में कारगर है।

- वाजपेयी, अटल बिहारी. (2002). नई चुनौती, नया अवसर, दिल्ली: किताब घर प्रकाशन।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तुत पुस्तक नई चुनौतियां नया अवसर में अटलजी ने अपने दायित्वों और उसकी चुनौतियों को रेखांकित करते हुए लिखा है शासन, प्रशासन के द्वंद और राष्ट्र हित के फैसलों में अक्सर वे अपने को उलझा हुआ पाते थे। कई बार न चाहते हुए भी हमें ऐसे फैसले लेने पड़े जिससे वे स्वयं भी इत्तेफाक नहीं रखते थे। ऐसे ही चुनौतियों के बारे में पुस्तक हमें उससे निकलने का मार्ग सुझाती है। अटल जी ने यह पुस्तक बहुत ही मनोयोग से लिखा है जो यह पुस्तक पढ़ने के बाद स्पष्ट हो जाता है।

- वाजपेयी, अटल बिहारी, घटाते नारायण माधव. (1999). अटल बिहारी वाजपेयी, मेरी संसदीय यात्राः राष्ट्रीय स्थिति, दिल्लीः प्रभात प्रकाशन।

अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्री रहते हुए संसद में हुए उनके पूरे कार्यवृत का विवरण इस पुस्तक के माध्यम से देखा जा सकता है। अटल बिहार वाजपेयी ने अपनी पूरी संसदीय जीवन यात्रा का तुलनात्मधक अध्ययन, भारत की स्थिति और अपनी परिस्थिति के साथ किया है। प्रस्तुत पुस्तक राजनीति की विडंबनाओं को रेखांकित करती है कि किस प्रकार एक राजनेता देश के हित में कोई कानून या फैसला करना चाहता है लेकिन बहुमत विपक्ष के खेमे में जाता है और वह फैसला धरा का धरा रह जाता है।

- शर्मा, चंद्रिका प्रसाद, (2001). अटलजी की अमेरिका यात्रा, दिल्लीः किताब घर प्रकाशन।

अटलजी के भारत सरकार की विदेश नीति को समझाते हुए एशिया सोसायटी में दिए गए भाषण को इस पुस्तक में संकलित किया गया है। इसमें उन्होंने कहा "मैं समझता हूं कि एशिया में शांति और समृद्धि सही मायने में तभी कायम हो सकती है जब इस महाद्वीप के राष्ट्र अपने संकीर्ण स्वार्थों से उपर उठकर सामुहिक हित की बात सोचें। सामुहिक हित की बात तभी हो सकती है जब हमारे संबंध नजदीकी और मित्रता पूर्ण हों।" उपरोक्त कथन से हम पुस्ततक के मर्म को समझ सकते हैं कि किस प्रकार अटलजी अपने पड़ोसी देशों के साथ मधुर संबंध को लेकर चिंतित रहते थे। संपादक ने

अटलजी की अमेरिका यात्रा का विस्तृत विवरण पुस्तक में संकलित किया है। जो देश की विदेशी नीति को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

- कमलेश्ववर, (2008). अघोषित आपातकाल, दिल्लीः आलेख प्रकाशन।

प्रस्तुत पुस्तक दो खण्डों - कहां है हमारा वतन और कुछ सवाल जनपथ के, को केंद्रित करते हुए लिखी गई है। प्रस्तुत पुस्तक हिंदुओं को ज्यादा जरूरत है धर्मनिरपेक्षता की जैसे संवेदनशील मुद्दों को उठाती है। पुस्तक में भारतीय इतिहास के तथ्यों को भी कुरेदने की कोशिश की गई है। देश में इस्लामी आतंकवाद के एक विस्तृत इतिहास की रक्त रंजित तिथियों को भी रेखांकित किया है। इसमें प्रथम विश्व युद्ध से लेकर हाल तक के अघोषित युद्धों को और उनके रक्तपात को चिन्हित किया गया है।

शोध की सीमाएं

प्रस्तुत शोध अध्ययन विषय 'भारतीय राजनीति में आदर्श के प्रतिमान अटल बिहारी वाजपेयी', भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के राजनीतिक जीवन और उनके द्वारा स्थापित आदर्शो पर केन्द्रित है। अध्ययन में वाजपेयी जी द्वारा लिए गए जनहित के विकास कार्यों और उनके जीवन के आदर्शों को व्याख्यायित किया गया है। अध्ययन में उनके प्रधानमंत्री और सांसद दोनों कार्यकाल को रेखांकित किया गया है।

शोध का महत्व

भारतीय राजनीति की दशा और दिशा आज किसी से छुपी नहीं है। सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों आज अपनी ज़िम्मेदारी नहीं निभा रहे हैं। आज राजनेताओं की राजनीति का धर्म बदल गया है जिसके उदाहरण प्रतिदिन सोशल मीडिया, अखबार और टेलीविज़न में उनके कारनामों के माध्यम से दिखाई और सुनाई देते हैं। ऐसे में अटल बिहारी वाजपेयी के राजनीति आदर्श और भी ज्यादा प्रासंगिक हो जाते हैं कि कैसे एक व्यक्ति ने अपना पूरा जीवन राष्ट्र के नाम समर्पित कर दिया। कैसे राष्ट्र का विकास ही उनका जीवन बन गया। आज राजनीति में जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को इसका अध्ययन आवश्यक हो गया है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'भारतीय राजनीति में आदर्श के प्रतिमान अटल बिहारी वाजपेयी' हेतु निम्न शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है-

वैयक्तिक अध्ययन- शोध अध्ययन को मूर्त रूप देने के लिए वैयक्तिक अध्ययन शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इसके माध्यम से अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन काल का अध्ययन किया है।

प्रस्तावना

16 अगस्त, 2018 को अटल बिहारी वाजपेयी का निधन हो हुआ। जिसके बाद पूरा देश शोक में डूब गया। केंद्र सरकार ने अटल बिहारी वाजपेयी निधन पर उनकी की तस्वीर वाला 100 रुपये का सिक्का जारी किया। बतौर राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी हर मुमकिन ऊंचाई तक पहुंचे, वे प्रधानमंत्री के तौर पर अपना कार्यकाल पूरा करने वाले पहले ग़ैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री रहे।

भारतीय जनता पार्टी जिसने दो सीटें प्राप्त की थी उसे सरकार का नेतृत्व करने और उसके सरकार बनाने में अटल बिहारी वाजपेयी की भारतीय राजनीति में उनकी स्वीकार्यता के तौर पर देखा जाता है और यह करिश्मा केवल वही कर सकते थे। अटल बिहारी वाजपेयी तीन बार भारत के प्रधानमंत्री रहे, पहले 13 दिन तक, फिर 13 महीने तक और उसके बाद 1999 से 2004 तक का कार्यकाल उन्होंने पूरा किया। इस दौरान उन्होंने ये साबित किया कि देश में गठबंधन की सरकारों को भी सफलता से चलाया जा सकता है।

अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीतिक, सांस्कृतिक चेतना के आधार स्तम्भ के तौर पर प्रतिबिम्बित होते हैं। उन्होंने भारत के जनजागरण और उसकी समृद्धि के लिए बड़े और महत्वपूर्ण फैसले लिए जिसने देश की राजनीतिक समझ-बूझ को एक नया आधार प्रदान किया। देश को जोड़ने के साथ ही उन्होंने सामाजिक हित में कार्य किया।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

स्थिर सरकार के मुखिया बने तो उन्होंने ऐसे कई बड़े फ़ैसले लिए जिसने भारत की राजनीति को हमेशा के लिए बदल दिया, ये वाजपेयी की कुशलता ही कही जाएगी कि उन्होंने एक तरह से दक्षिणपंथ की राजनीति को भारतीय जनमानस में इस तरह रचा बसा दिया जिसके चलते एक दशक बाद भारतीय जनता पार्टी ने वो बहुमत हासिल कर दिखाया जिसकी एक समय में कल्पना भी नहीं की जाती थी।

अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री रहते हुए जिस संयम और दृढ़ता से उन्होंने कारगिल संकट का सामना किया, उसने उन्हें दुनिया के शीर्ष राजनेताओं में शुमार कर दिया। वाजपेयी जी राजनीति को हमेशा सौहार्दपूर्ण बनाने कि दिशा में कार्यरत थे यही वजह है कि वह अपने सभी पड़ोसी देशों के साथ मैत्री रखना चाहते थे और हर मौके पर उनके साथ दोस्ती का हाथ आगे बढ़ा दिया करते थे। इसके साथ ही वो देश को शक्तिशाली बनाने के लिए भी प्रतिबद्ध थे। यही वजह है कि परमाणु शक्ति संपन्न देशों की संभावित नाराजगी होगी इससे परचित होते हुए भी, बिना विचलित हुए उन्होंने अग्नि-II और परमाणु परीक्षण कर देश की सुरक्षा के लिए दृढ़ कदम उठाए। जिसके बाद पूरे विश्व को यह ज्ञात हो गया कि भारत अब किसी से कमजोर नहीं है। वाजपेयी जी ने देश हिट में बहुत से उल्लेखीय कार्य किए। वाजपेयी जी ने सौ साल से भी ज्यादा पुराने कावेरी जल विवाद को सुलझाया, संरचनात्मक ढाँचे के लिए कार्यदल का, सॉफ्टवेयर विकास के लिए सूचना एवं प्रौद्योगिकी कार्यदल, केन्द्रीय बिजली नियंत्रण आयोग आदि का गठन किया, साथ ही राष्ट्रीय राजमार्गों एवं हवाई अड्डों का विकास, नई टेलीकॉम नीति तथा कोंकण रेलवे की शुरुआत आदि के माध्यम से बुनियादी संरचनात्मक ढ़ाँचें को मजबूत करने वाले कदम उठाए। उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा समिति, आर्थिक सलाह समिति, व्यापार एवं उद्योग समिति भी गठित कीं। इनके अलावा उन्होंने आवश्यक उपभोक्ता सामग्रियों की कीमतों को नियंत्रित करने के लिए मुख्यमंत्रियों का सम्मेलन बुलाया, उड़ीसा के सर्वाधिक गरीब क्षेत्र के लिए सात सूत्री गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम शुरू किया, आवास

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

निर्माण को प्रोत्साहन देने के लिए अर्बन सीलिंग एक्ट समाप्त किया तथा ग्रामीण रोजगार सृजन एवं विदेशों में बसे भारतीय मूल के लोगों के लिए बीमा योजना शुरू की।

प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के वे अहम फ़ैसले जिसने भारतीय राजनीति में उन्हें एक आदर्श के रूप में स्थापित किया।

हिंदुस्तान को जोड़ने की योजना

प्रधानमंत्री के तौर पर अटल बिहारी वाजपेयी जी सबसे महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय कार्य सड़कों के माध्यम से भारत को जोड़ने की योजना है। उन्होंने चेन्नई, कोलकाता, दिल्ली और मुंबई को जोड़ने के लिए स्वर्णिम चतुर्भुज सड़क परियोजना लागू की। साथ ही ग्रामीण अंचलों के लिए प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना लागू की। उनके इस फ़ैसले ने देश के आर्थिक विकास को पंख दिए। हालांकि, उनकी सरकार के दौरान ही भारतीय स्तर पर नदियों को जोड़ने की योजना का ख़ाका भी बना था। जो अभी भी पूर्ण होना बाकी है। नदियों को जोड़ने के बाद देश में हर प्रदेश हरा-भरा रहेगा और जल संकट समाप्त हो जाएगा।

संचार क्रांति का दूसरा चरण

भारत में संचार क्रांति का जनक भले राजीव गांधी को माना जाता हो लेकिन उसे आम लोगों तक पहुंचाने का काम वाजपेयी सरकार ने ही किया था। 1999 में वाजपेयी ने भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) के एकाधिकार को ख़त्म करते हुए नई टेलिकॉम नीति लागू की। रेवेन्यू शेयरिंग मॉडल के ज़रिए लोगों को सस्ती दरों पर फ़ोन कॉल्स करने का फ़ायदा मिला और बाद में सस्ती मोबाइल फ़ोन का दौर शुरू हुआ।

सर्व शिक्षा अभियान

देश को शिक्षित करने के उद्देश्य से वाजपेयी जी ने 6 से 14 साल के बच्चों को मुफ़्त शिक्षा देने का अभियान शुरू किया। 2000-01 में उन्होंने ये स्कीम लागू की। जिसके चलते बीच में पढ़ाई छोड़ देने वाले बच्चों की संख्या में कमी दर्ज की गई। 2000 में जहां 40 फ़ीसदी बच्चे ड्रॉप आउट्स होते थे, उनकी संख्या 2005 आते आते 10 फ़ीसदी के

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आसपास आ गई थी। इस मिशन से वाजपेयी जी के लगाव का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने स्कीम को प्रमोट करने वाली थीम लाइन 'स्कूल चले हम' ख़ुद से लिखा था।

पोखरण का परीक्षण

मई 1998 में भारत ने पोखरण में परमाणु परीक्षण किया था। ये 1974 के बाद भारत का पहला परमाणु परीक्षण था। वाजपेयी जी ने परीक्षण ये दिखाने के लिए किय़ा था कि भारत परमाणु संपन्न देश है। उन्होंने बिना किसी भय के यह परीक्षण किया जिसके बाद अमरीका, ब्रिटेन, कनाडा और कई पश्चिमी देशों ने भारत पर आर्थिक पांबदी लगा दी थी लेकिन वाजपेयी जी की कूटनीति कौशल का कमाल था कि 2001 के आते-आते ज़्यादातर देशों ने अपनी सारी पाबंदियां हटा ली थीं।

पोटा क़ानून

प्रधानमंत्री के तौर पर ये वाजपेयी के पूर्ण कार्यकाल का दौर था जब 13 दिसंबर, 2001 को पांच चरमपंथियों ने भारतीय संसद पर हमला कर दिया। ये भारतीय संसदीय इतिहास का सबसे काला दिन माना जाता है। इस हमले में भारत के किसी नेता को कोई नुकसान नहीं पहुंचा था लेकिन पांचों चरमपंथी और कई सुरक्षाकर्मी मारे गए थे। इससे पहले नौ सितंबर को अमरीका के वर्ल्ड ट्रेड टॉवर सबसे भयावह आतंकी हमला हो चुका था। इन सबको देखते हुए आतंरिक सुरक्षा के लिए सख़्त क़ानून बनाने की मांग ज़ोर पकड़ने लगी थी और वाजपेयी सरकार ने पोटा क़ानून बनाया, ये बेहद सख़्त आतंकवाद निरोधी क़ानून था, जिसे 1995 के टाडा क़ानून के मुक़ाबले बेहद कड़ा माना गया था।

महिलाओं के सशक्तिकरण और सामाजिक समानता के समर्थक श्री वाजपेयी भारत को सभी राष्ट्रों के बीच एक दूरदर्शी, विकसित, मजबूत और समृद्ध राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ते हुए देखना चाहते थे। उन्हें भारत के प्रति उनके निःस्वार्थ समर्पण और पचास से अधिक वर्षों तक देश और समाज की सेवा करने के लिए भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण दिया गया। 1994 में उन्हें भारत का ‘सर्वश्रेष्ठ सांसद’ चुना

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

गया। अटल बिहारी वाजपेयी अपने नाम के ही समान अटल रहे, एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय नेता, प्रखर राजनीतिज्ञ, निःस्वार्थ सामाजिक कार्यकर्ता, सशक्त वक्ता, कवि, साहित्यकार, पत्रकार और बहुआयामी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। अटलजी जनता की बातों को ध्यान से सुनते थे और उनकी आकाँक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करते थे। उनके द्वारा किए गए कार्य राष्ट्र के प्रति उनके समर्पण को दिखाते हैं।

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'भारतीय राजनीति में आदर्श के प्रतिमान अटल बिहारी वाजपेयी' के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

- भारतीय राजनीति में अटल जी के कार्य और उनका सम्पूर्ण जीवन एक आदर्श के रूप में है।
- अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यों ने देश के विकास को नई दिशा प्रदान की और देश का आर्थिक विकास तीव्र गति से हुआ।
- अटल बिहारी वाजपेयी जी अच्छे राजनेता, पत्रकार के साथ एक बहुत अच्छे कवि भी थे।
- अटल बिहारी वाजपेयी एक राष्ट्रवादी नेता थे उनके लिए देश सर्वप्रथम था।
- अटल बिहारी वाजपेयी की विदेश नीति बहुत सुदृढ़ थी।

शोध सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'भारतीय राजनीति में आदर्श के प्रतिमान अटल बिहारी वाजपेयी' के पश्चात निम्नलिखित सुझाव दिए जा रहे हैं-

- अटल बिहारी वाजपेयी जी की नदियों की जोड़ने की योजना पर शीघ्र अमल करने की आवश्यकता है।
- अटल बिहारी वाजपेयी के सम्पूर्ण जीवन चरित्र को पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए जिससे देश की भावी पीढ़ी उनके आदर्शों से परिचित हो सके।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

- देश के प्रत्येक जिले में अटल पुस्तकालय स्थापित करना चाहिए। जिसमें देश के लोग अध्ययन कर सके और अपने पूर्व प्रधानमंत्री को जान सके।
- देश की राजनीति में सुचिता स्थापित करने के लिए सरकार को एक टास्क फोर्स का गठन करना चाहिए जो नेताओं के भ्रष्टाचार पर नजर रखे।
- अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर सड़कों और स्थलों का नामकरण किया जाना चाहिए।

सहायक संदर्भ सूची

वाजपेयी, अटल बिहारी. (2009). संकल्प-काल. दिल्लीः प्रभात प्रकाशन. ISBN- 9788173153006

वाजपेयी, अटल बिहारी, शर्मा, डॉ. चंद्रिका प्रसाद (संपादक). (1997). बिन्दु-बिन्दु विचार, नई दिल्लीः किताब घर प्रकाशन, ISBN 81- 7016-386-2

वाजपेयी, अटल बिहारी, घटाते, नाराण माधव. (2004). गठबंधन की राजनीति, दिल्ली , प्रभात प्रकाशन, ISBN 8173154791

राजस्वी7, एमआई. (2004). अटल बिहारी वाजपेयी. दिल्लीपः मनोज प्रकाशन, ISBN 8181335007

वाजपेयी, अटल बिहारी . (2002). नई चुनौती, नया अवसर, दिल्लीरः किताब घर प्रकाशन

शर्मा, चंद्रिका प्रसाद, (2001). अटलजी की अमेरिका यात्रा, दिल्लीब. किताब घर प्रकाशन, ISBN 81-7016-495-8

शर्मा, महेश. जन-जन के नेता अटल बिहारी वाजपेयी, दिल्लीदः डायमंड पॉकेट बुक्स9 (प्रा.) लि. ISBN 8128807021

शर्मा, महेश. (2016). प्रखर राष्ट्रवादी नेता अटल बिहारी वाजपेयी, दिल्लीयः डायमंड पॉकेट बुक्सश (प्रा.) लि. ISBN 9352614917

वाजपेयी, अटल बिहारी, घटाते नारायण माधव, (1999). अटल बिहारी वाजपेयी, मेरी संसदीय यात्राः राष्ट्री य स्थिति, दिल्लीर, प्रभात प्रकाशन, ISBN 8173152810

कमलेश्वार, (2008) अघोषित आपातकाल, दिल्लीरः आलेख प्रकाशन, ISBN 8181870824

Raghavan, G. N. S., ed. 1997. New Era in the Indian Polity, A Study of Atal Bihari Vajpayee and the BJP. New Delhi, India: Gyan Publishing House.

Sharma, Chandrika Prasad. 1998. Poet Politician: Atal Bihari Vajpayee: A Biography. New Delhi, India: Kitab Ghar Prakashan.

Vajpayee, Atal Bihari. 2000. Prime Minister Atal Bihari Vajpayee, Selected Speeches. 2 vols. New Dehli, India: Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India.

Vajpayee, Atal Bihari. 2005. Atal Bihari Vajpayee: Poet and Ex Prime Minister. New Delhi, India: Pentagon Press.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बेवसाइट संदर्भ

http://www.encyclopedia.com/social-sciences/applied-and-social-sciences-magazines/vajpayee-atal-bihari

https://books.google.co.in/books?id=NXIbPYHeH1UC&printsec=frontcover#v=onepage&q&f=false

https://books.google.co.in/books?id=phMnc1tevHYC&printsec=frontcover#v=onepage&q&f=false

https://books.google.co.in/books?id=4FR2Ca4OCykC&printsec=frontcover#v=onepage&q&f=false

https://books.google.co.in/books?id=Pl9EDQAAQBAJ&dq=%E0%A4%85

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies